मैथिली (100)
कक्षा - 12

बसंत कुमार
अतिथि शिक्षक
दिनांक - 21.07.20

प्रकरण - बाल-लीला 25-02-21

तरुक सबद सुनि दौड़ल नन्द।
तेजि देल गाय परओ वरु बन्द।
की तरु खसल बसात न झांरि।
आज होइत मोर बाहर वार।

प्रस्तुत पद्यांश 'कृष्ण जन्म' प्रबंधकाव्य सँ उद्धृत अछि। कविवर मनबोध श्रीकृष्णक बाल रुपक स्वाभाविक वर्णन करने छथि।

श्री कृष्ण जखन जमला अर्जुन गाछ केँ खसाबैत छथि। एहि गाछ खसबाक ध्वनि सुनि नन्दजी अपन गायकेँ अनेड़ जकाँ छोड़ि हताश भेल कृष्णक लग भागि जाइत छथि। देखैत छथि जे कतहुसँ बिहाड़ि आ बसातक आभास नहि छैक तखन गाछ किएक खसल? जँ हमरा बच्चाकेँ एहि गाछसँ किछु भ' जाइत त' की होइत। हमर सबकिछु लूटि जाइत आ हम कतहुक नहि रहितहुँ।